सूरह — एक कहानी

सूरह अल-बलद

शहर

पूरा सफ़र — वो चढ़ाई जिस पर कोई नहीं चढ़ता —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 90 • 20 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

ला उक़्सिमु बि-हाज़ल्-बलद
1. मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ।

लक़द ख़लक़्नल्-इंसान फ़ी कबद
4. बेशक हमने इंसान को मशक़्क़त में पैदा किया।

व हदैनाहुन्-नज्दैन
10. और हमने उसे दोनों रास्ते दिखा दिए।

फ़-लक़्त्तहमल्-'अक़बह
11. मगर वो उस चढ़ाई पर नहीं चढ़ा।

फ़क्कु रक़बह
13. एक गर्दन को आज़ाद कराना।

व तवासौ बिस्-सब्रि व तवासौ बिल्-मरहमह
17. और एक दूसरे को सब्र और रहम की नसीहत की।

एक शहर की क़सम — और आपकी

बेटा, यह सूरह एक जगह की क़सम से शुरू होती है, और फिर वो काम करती है जो क़ुरआन में बिल्कुल इसी अंदाज़ में कहीं और नहीं मिलता: यह शहर की क़सम खाती है, और फिर उसी क़सम के अंदर रसूलुल्लाह ﷺ का ज़िक्र कर देती है।

'ला उक़्सिमु बि-हाज़ल्-बलद — मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ — व अन्त हिल्लुन बि-हाज़ल्-बलद — और आप इस शहर में 'हिल्ल' हैं — रहने वाले, बसने वाले।'

बेटा, शहर मक्का है — वो मुक़द्दस हरम जहाँ न ख़ून बहाया जा सकता है, न दरख़्त काटा जा सकता है, न शिकार किया जा सकता है। ज़मीन की सबसे महफ़ूज़ मिट्टी। और अल्लाह एक तल्ख़ तज़ाद की तरफ़ इशारा कर रहे हैं: यह शहर मुक़द्दस है, इसका अमन ख़ुद अल्लाह ने ज़ामिन लिया है — और फिर भी इस शहर के लोग मोमिनीन को क़त्ल और अज़ाब देना, और मुहम्मद ﷺ को तकलीफ़ पहुँचाना जाइज़ समझते हैं।

उलमा ने 'व अन्त हिल्लुन' की एक से ज़्यादा तशरीहात की हैं, बेटा। एक: ऐ मुहम्मद ﷺ, आप इस शहर में बसने वाले हैं — इस शहर का शरफ़ इसी वजह से है कि आप इसमें रहते हैं। दूसरी: ये लोग आपको 'हिल्ल' समझते हैं — गोया आपको नुक़सान पहुँचाना हलाल हो — उसी शहर में जहाँ एक परिंदे को नुक़सान पहुँचाना हराम है। इस बात की तीखी महसूस कीजिए: यहाँ एक परिंदा महफ़ूज़ है, और अल्लाह के रसूल नहीं।

'व वालिदिंव्-व मा वलद — और क़सम है बाप की और उसकी जो उसने जना।' एक वालिद और उसकी औलाद — क़सम अब जगह से रिश्ते की तरफ़ बढ़ गई, सबसे मुक़द्दस ज़मीन से सबसे गहरे इंसानी ताल्लुक़ की तरफ़।

मशक़्क़त में पैदा किया गया

'लक़द ख़लक़्नल्-इंसान फ़ी कबद — बेशक हमने इंसान को कबद में पैदा किया।'

बेटा, 'कबद' का मतलब है जद्दो-जहद, मशक़्क़त, मुश्किल, किसी सख़्त चीज़ के बीचो-बीच होना। और अल्लाह यह नहीं फ़रमाते कि इंसान मशक़्क़त का सामना करता है — वो फ़रमाते हैं कि उसे उसी में पैदा किया गया। मुश्किल ज़िंदगी में आने वाली रुकावट नहीं है; वो ज़िंदगी का माहौल है, जैसे पानी मछली का माहौल है।

ईमानदारी से सोचिए, बेटा। सबसे पहले लम्हे से: पैदाइश ख़ुद एक जद्दो-जहद है, माँ के लिए भी और बच्चे के लिए भी। फिर दाँत निकलना। फिर चलना सीखना, बार बार गिरना। फिर स्कूल, इम्तिहानात, नौकरी की तलाश, शादी, बच्चों की परवरिश, ख़र्चे, बीमारी, बुढ़ापा, और आख़िर में मौत — जो सबसे सख़्त मरहला है। और उनके दरमियान छोटी छोटी जंगें: अपनी सुस्ती, अपने ग़ुस्से और अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ रोज़ाना की लड़ाई।

तो जब हम शिकायत करते हैं कि 'ज़िंदगी इतनी मुश्किल क्यों है?' — क़ुरआन जवाब देता है: क्योंकि इसे ठीक इसी तरह बनाया गया था। बेटा, यह मायूस करने वाली आयत नहीं है; यह आज़ाद करने वाली आयत है। हमारी ज़्यादातर तकलीफ़ मुश्किल से नहीं आती, बल्कि इस अक़ीदे से आती है कि मुश्किल ग़ैर-फ़ितरी है — कि बाक़ी

सब को आसान वर्ज़न मिला और हम अकेले चुन लिए गए। जब आप 'ख़ुलिक़ फ़ी कबद' मान लेते हैं, तो आप एक बे-मुश्किल ज़िंदगी के शुरू होने का इंतिज़ार छोड़ देते हैं, और जो ज़िंदगी आपके पास है उसे इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं।

'अ यह्सबु अन लन यक़्दिर 'अलैहि अहद — क्या वो समझता है कि उस पर किसी का ज़ोर नहीं?' बेटा, यही वो तकब्बुर है जो ताक़त और दौलत के साथ आता है: मैं किसी को जवाब-देह नहीं। 'यक़ूलु अह्लक्तु मालल्-लुबदा — वो कहता है: मैंने ढेर सारा माल उड़ा दिया!' फ़ख़्र कर रहा है कि उसने कितना ख़र्च किया — अपनी साख़ पर, हक़ की मुख़ालफ़त पर। 'अ यह्सबु अल्-लम यरहू अहद — क्या वो समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?'

बेटा, दो आयतों में दो धोके: मुझे कोई जवाब-देह नहीं ठहरा सकता, और मुझे किसी ने देखा नहीं। दोनों झूट हैं, और दोनों ही वजह हैं कि लोग अँधेरे में वो करते हैं जो करते हैं।

तीन अताएँ और दो रास्ते

फिर अल्लाह इस फ़ख़्र करने वाले को याद दिलाते हैं कि उसे क्या दिया गया था — और फ़ेहरिस्त अपनी सादगी में हैरान कर देती है: 'अलम नज्'अल लहू 'ऐनैन — क्या हमने उसके लिए दो आँखें नहीं बनाईं — व लिसानंव्-व शफ़तैन — और एक ज़ुबान और दो होंट?'

बेटा, यही क्यों? जितने आ'ज़ा अल्लाह ज़िक्र कर सकते थे — दिल, दिमाग़, हाथ — उन्होंने आँखें और बोलने का निज़ाम चुना। क्योंकि यही हिदायत और तबाही दोनों के औज़ार हैं: वो आँखें जिनसे आप निशानियाँ देखते हैं (या हराम के पीछे भागते हैं), और वो ज़ुबान और होंट जिनसे आप सच बोलते हैं (या झूट बोलते, मज़ाक़ उड़ाते, तोहमत लगाते और फ़ख़्र करते हैं — जैसा यह आदमी कर रहा था)।

और ग़ौर कीजिए कि होंट ज़ुबान से अलग ज़िक्र किए गए। उलमा सोचते हैं: ज़ुबान को दो दरवाज़े दिए गए — दाँत और होंट — गोया यह कहने के लिए कि कोई लफ़्ज़ आप से निकलने से पहले दो रुकावटों से गुज़रे। बेटा, गुफ़्तगू को हिफ़ाज़त में रखने के लिए ही बनाया गया था।

'व हदैनाहुन्-नज्दैन — और हमने उसे दो नज्द दिखा दिए।' 'नज्द', बेटा, उस बुलंद, उठे हुए रास्ते को कहते हैं — वो शाहराह जो ऊँचाई पर साफ़ नज़र आती है। दो वाज़ेह रास्ते: नेकी और बुराई। और अल्लाह फ़रमाते हैं कि उन्होंने उसे दोनों दिखा दिए — हर नफ़्स में रखी हुई फ़ितरत के ज़रिए, रसूलों के ज़रिए, इस किताब के ज़रिए।

तो इंसान को पूरा सामान दे दिया गया: देखने को आँखें, इज़हार को ज़ुबान, और एक ऐसा नक़्शा जिस पर दो रास्ते साफ़ निशान-ज़दा हैं। कोई यह नहीं कह सकेगा: मुझे फ़र्क़ मालूम ही नहीं था।

वो चढ़ाई जिस पर कोई नहीं चढ़ता

और अब, बेटा, इस सूरह के दिल में मौजूद आयत — और इसे हम सब को बे-चैन करना चाहिए: 'फ़-लक़्तहमल्-'अक़बह — मगर वो उस चढ़ाई पर नहीं चढ़ा।'

"अक़बह' एक सख़्त पहाड़ी चढ़ाई है — एक दुश्वार, ऊपर की तरफ़ जाने वाला रास्ता। और 'इक़्तिहाम' का मतलब है पूरी शिद्दत से किसी चीज़ में कूद पड़ना — बग़ैर झिझक के अपने आप को मुश्किल पर फेंक देना।

तो आयत कहती है: इंसान को आँखें दी गईं, ज़ुबान दी गई, और दो रास्तों वाला नक़्शा दिया गया — और फिर भी उसने अपने आप को उस चढ़ाई वाले रास्ते पर नहीं फेंका। उसने हमवार, आसान रास्ता चुना, जैसा तक़रीबन सब चुनते हैं।

'व मा अद्राक मल्-'अक़बह — और आपको क्या मालूम कि वो चढ़ाई क्या है?' बेटा, जब भी अल्लाह यह पूछते हैं, वो कुछ ऐसा बताने वाले होते हैं जिसका हम कभी अंदाज़ा न लगाते। तो आप क्या समझते हैं वो चढ़ाई क्या होगी — चालीस साल के रोज़े? पैदल हज? ग़ार में ज़िंदगी?

जवाब सुनिए: 'फ़क्कु रक़बह — एक गर्दन को आज़ाद कराना — औ इत्'आमुन फ़ी यौमिन ज़ी मस्ग़बह — या खाना खिलाना, सख़्त भूक के दिन — यतीमन ज़ा मक़्रबह — किसी रिश्तेदार यतीम को — औ मिस्कीनन ज़ा मत्रबह — या किसी मिट्टी में लोट-पट मिस्कीन को।'

बेटा, यह है वो चढ़ाई वाला पहाड़: एक इंसान को ग़ुलामी से आज़ाद कराना, और भूकों को खिलाना जब खाना कम और क़ीमती हो। कोई रूहानी करिश्मा नहीं — एक अमली काम।

और वो नाज़ुक तफ़सीलात देखिए जो अल्लाह ने बढ़ाईं। 'सख़्त भूक के दिन' — जब खाना महँगा हो और आप ख़ुद उसे चाहते हों; फ़ुज़ूल बचा हुआ तो कोई भी दे सकता है। 'ऐसा यतीम जो रिश्तेदार हो' — क्योंकि अपने ग़रीब रिश्तेदारों की मदद अना पर अजनबियों के सदक़े से ज़्यादा भारी होती है; अजनबी शुक्रिया अदा करते हैं और आपको बड़ा समझते हैं, जबकि रिश्तेदार आपको जानते हैं, और पुरानी बातें होती हैं, और कभी कभी हसद भी। 'मिट्टी में लोट-पट मिस्कीन' — 'मत्रबह', ज़मीन से चिपका हुआ, इतना मोहताज कि उसके और ज़मीन के दरमियान कुछ भी नहीं।

बेटा, यह चढ़ाई वाला रास्ता क्यों है? क्योंकि यह इंसानी नफ़्स की सबसे बड़ी कशिश के ख़िलाफ़ ऊपर की तरफ़ जाता है: माल की मोहब्बत और अपनी ज़ात की मोहब्बत। नफ़्स ख़ुशी ख़ुशी नमाज़ पढ़ लेगा, रोज़ा रख लेगा, तिलावत कर लेगा — उन सब में पैसा नहीं लगता। मगर उस वक़्त हाथ खोलना जब आपको ख़ुद ज़रूरत हो, और उसे देना जो इसके बदले आपकी तारीफ़ भी नहीं करेगा — यही वो चढ़ाई है।

'सुम्म कान मिनल्-लज़ीन आमनू — और फिर वो उन में से हुआ जो ईमान लाए — व तवासौ बिस्-सब्रि व तवासौ बिल्-मरहमह — और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की और एक दूसरे को रहम की नसीहत की।'

बेटा, इसे ग़ौर से देखिए — ये खिलाना और आज़ाद कराना ईमान के साथ होना चाहिए, वरना यह सिर्फ़ समाजी ख़िदमत है, अल्लाह के हाँ उसका कोई हिसाब नहीं। और फिर दो बाहमी ज़िम्मेदारियाँ: एक दूसरे को सब्र की नसीहत, और एक दूसरे को मरहमह — रहम — की नसीहत। एक पूरी जमाअत जो ख़ुद को रहम दिली की याद दिलाती रहे। सोचिए, बेटा, अगर हमारे घर और हमारे ग्रुप्स यही करते: एक दूसरे को ग़ुस्से के बजाय सब्र और रहम की तरफ़ धकेलते।

'उलाइक अस्हाबुल्-मैमनह — यही दाएँ हाथ वाले हैं।'

वो आग जो बंद कर दी जाएगी

और सूरह दूसरे गिरोह पर ख़त्म होती है: 'वल्-लज़ीन कफ़रू बि-आयातिना हुम अस्हाबुल्-मश्अमह — और जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया — यही बाएँ हाथ वाले हैं — 'अलैहिम नारुम्-मु'सदह — उन पर एक बंद की हुई आग होगी।'

बेटा, 'मु'सदह' का मतलब है बंद, सील, उन पर मुक़फ़्फ़ल — जैसे कोई दरवाज़ा किसी को अंदर रख कर बंद कर के ताला लगा दिया जाए। न कोई खुलाव, न हवा का रास्ता, न निकलने की सूरत।

और अब इस पूरी सूरह की बनावट देखिए, बेटा। इसका आग़ाज़ एक शहर से हुआ — पनाह और अमन की जगह। इसका इख़्तिताम एक ऐसी आग पर होता है जो बंद कर दी गई है। इन दोनों के दरमियान अल्लाह ने चुनाव रख दिया: वो हमवार रास्ता जो ज़्यादातर लोग लेते हैं, या वो चढ़ाई वाला रास्ता — आज़ाद कराना, खिलाना, ईमान लाना, और एक दूसरे को सब्र और रहम की तरफ़ बुलाना।

और आख़िर में एक हौसला-अफ़ज़ाई। जो चढ़ाई अल्लाह ने बयान की, वो किसी के लिए भी ना-मुमकिन नहीं है। हो सकता है आपके पास आज़ाद करने के लिए कोई ग़ुलाम न हो — मगर आपके आस पास लोग दूसरी क़िस्म की ग़ुलामी में हैं: कोई क़र्ज़ में डूब रहा है, कोई मज़दूर ज़ालिम मालिक के चंगुल में है, कोई शख़्स किसी लत या किसी ग़लत सोहबत का क़ैदी है। और भूक के दिन खिलाना हर उस शख़्स के लिए मौजूद है जिसके पास एक प्लेट खाना है।

बेटा, यही इस सूरह की रहमत है: यह पहाड़ को ले कर उसे सीढ़ियों में बदल देती है। और यह बताती है कि असल कामयाब कौन है — वो आदमी नहीं जो फ़ख़्र करता है कि 'मैंने ढेर सारा माल उड़ा दिया', बल्कि वो जो ख़ामोशी से चढ़ता है, एक सख़्त दिन में अपने रिश्तेदार के यतीम को खिलाता है, और अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं चाहता।

इस सूरह से क्या सीखा

1. आपको मशक़्क़त में पैदा किया गया — बे-मुश्किल ज़िंदगी के शुरू होने का इंतिज़ार छोड़ दीजिए और जो है उसे इस्तेमाल कीजिए।

2. दो धोके लोगों को तबाह करते हैं: 'मुझे कोई जवाब-देह नहीं ठहरा सकता' और 'मुझे किसी ने देखा नहीं।' दोनों झूट हैं।

3. आँखें, ज़ुबान और होंट हिदायत के औज़ार के तौर पर दिए गए — और गुफ़्तगू दो दरवाज़ों के पीछे रखी गई ताकि उसकी हिफ़ाज़त हो।

4. दोनों रास्ते साफ़ निशान-ज़दा हैं; कोई यह उज़्र नहीं कर सकेगा कि उसे फ़र्क़ मालूम नहीं था।

5. चढ़ाई अमली है, रूहानी करिश्मा नहीं: किसी को क़ैद से निकालिए, और भूकों को उस दिन खिलाइए जब खाना क़ीमती हो।

6. पहले अपने ग़रीब रिश्तेदारों को दीजिए — यह अना पर भारी है, और तराज़ू में भी भारी।

7. ईमान के बग़ैर सदक़ा सिर्फ़ समाजी ख़िदमत है; अपने देने को ईमान के साथ जोड़िए, और ऐसी जमाअत बनाइए जो सब्र और रहम की नसीहत करे।

या अल्लाह, हमें उन में शामिल फ़रमाइए जो उस चढ़ाई पर ख़ुद को फेंक देते हैं — और हमें दाएँ हाथ वालों में से बना दीजिए। आमीन।